अथ एकोनचत्वारिंशाऽध्यायारम्भः

प्रथम मन्न में हवन करने का निर्देश है। स्वाहा प्राणेभ्य इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। प्राणादयो लिङ्गोक्ता देवताः। पङ्किश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

स्वाहां प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः ।

पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहाऽन्तिरक्षाय स्वाहां वायवे स्वाहां। दिवे स्वाहा । सूर्याय स्वाहां ॥१॥

स्वाहां प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्य इति साधिऽपतिकेभ्यः । पृथिव्ये स्वाहां अग्नयें स्वाहां अन्तरिक्षाय स्वाहां वायवें स्वाहां । दिवे स्वाहां । सूर्याय स्वाहां ॥१॥

हे मानव! (साधिंऽपतिकेभ्यः) इन्द्रियों को नियन्नित करने वाली जीवात्मा के साथ (प्राणेभ्यः) जीवन तुल्य प्राणों के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया यानि हवन करो, (पृथिव्यै) भूमि के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (अग्नयं) अग्नि के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (अग्नयं) आकाश के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (वायवं) वायु के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (वायवं) चायु के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (पूर्याय) सूर्य के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (पूर्याय) सूर्य के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (पूर्याय) सूर्य के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो।

The first mantra directs us to perform havan.

rişhih swaahaa praanebhya ityasya deerghatamaa, devataah praanaadayo lingoktaa, chhandah panktih, svarah panchamah

1. Om svaahaa praanebhyah saadhipatikebhyah prithivyai svaahaa'gnaye svaahaa'ntarikshaaya svaahaa vaayave svaahaa dive svaahaa sooryaaya svaahaa

O Human! (saadhipatikebhyaḥ) With the soul that is control of your senses, (svaahaa) perform the ultimate true deed i.e the havan (praaṇebhyaḥ) for the breath that is essential for life, (pṛithivyai) for mother earth, (agnaye) for the holy

fire, (antarikṣhaaya) for the skies and outer space, (vaayave) for the air, (dive) for the light and illumination and (sooryaaya) for the sun.

दूसरे मन्न में हवन की क्रिया को आगे बढाया गया है। दिग्भ्य इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। दिगादयो लिङ्गोक्ता देवताः। भुरिगनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

दिग्भ्यः स्वाहां चन्द्राय स्वाहा नक्षंत्रेभ्यः स्वाहाऽद्धः स्वाहा वर्रुणाय स्वाहां । नाभ्यै स्वाहां पूताय स्वाहां ॥२॥

दिग्भ्य इति दिक्ऽभ्यः स्वाहां चुन्द्रायं स्वाहां नक्षंत्रेभ्यः स्वाहां अन्ध्र इत्यत्ऽभ्यः स्वाहां वर्रुणाय स्वाहां । नाभ्ये स्वाहां पूतायं स्वाहां ॥२॥

हे मानव! तुम (दिक्ऽभ्यः) सभी दिशाओं मे हुतद्रव्य पहुँचाने के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो, (च्न्द्रायं) चन्द्रमा के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो, (नक्षंत्रेभ्यः) नक्षत्रों के प्रकाश के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो, (अद्धः) जल के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो, (वर्रणाय) समुद्रादि के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो, (नाभ्यें) नाभि के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो और (पूतार्य) पवित्र करने के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रिया करो ।

The second mantra extends the havan procedure further.

rishih digbhya ityasya deerghatamaa, devataah digaadayo lingoktaa, chhandah bhuriganushtup, svarah gaandhaarah

2. Om digbhyaḥ svaahaa chandraaya svaahaa nakṣhatrebhyaḥ svaahaa'dbhyaḥ svaahaa varuṇaaya svaahaa naabhyai svaahaa pootaaya svaahaa

O Human! Diligently (svaahaa) perform the havan, (digbhyaḥ) for spreading the goodness of the offerings in all directions, (chandraaya) for the moon, (nakṣhatrebhyaḥ) for the light emitted from stars, (adbhyaḥ) for the waters, (varuṇaaya) for the oceans, (naabhyai) for the naval and (pootaaya) for the purification.

तीसरे मन्न में हवन की क्रिया को आगे बढाया गया है। वाचे इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। वागादयो लिङ्गोक्ता देवताः। स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

वाचे स्वाहां प्राणाय स्वाहां प्राणाय स्वाहां ।

चक्षुंषे स्वाहां चक्षुंषे स्वाहां श्रोत्राय स्वाहां श्रोत्राय स्वाहां ॥३॥

वाचे स्वाहां प्राणायं स्वाहां प्राणायं स्वाहां ।

चक्षुंषे स्वाहां चक्षुंषे स्वाहां श्रोत्राय स्वाहां श्रोत्राय स्वाहां ॥३॥

हे मानव! इन्द्रियों के द्वारों के लिए क्रमशः, (वाचे) वाणी के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (प्राणायं) नासिका के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (प्राणायं) दूसरे नासिका छिद्र के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (चक्षुंषे) नेत्र के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (चक्षुंषे) दूसरे नेत्र के लिए (स्वाहां) सत्यिक्रया करो, (श्रोत्रांय) कान के लिए, (श्रोत्रांय) दूसरे

The third mantra extends the havan procedure further.

riṣhiḥ vaache ityasya deerghatamaa, devataaḥ vaagaadayo lingoktaa,
chhandaḥ svaraaḍanuṣhṭup, svaraḥ gaandhaaraḥ

कान के लिए (स्वाहा) सत्यक्रिया करो।

3. Om vaache svaahaa praanaaya svaahaa praanaaya svaahaa chakshushe svaahaa shrotraaya svaahaa svaahaa shrotraaya svaahaa

O Human! Diligently (svaahaa) perform the havan for the sensory organs, (vaache) for the organ of speech, (praaṇaaya) for the nostril, (praaṇaaya) for the second nostril, (chakṣhuṣhe) for the eye, (chakṣhuṣhe) for the second eye, (shrotraaya) for the ear, (shrotraaya) for the second ear.

चौथे मन्न में हवन से पवित्र हुए मन और वाणी के लाभ दर्शाए हैं। मनस इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। श्रीर्देवता। निचृद् बृहती छुन्दः। मध्यमः स्वरः।

मनसः काममाकूतिं वाचः स्त्यमंशीय ।

पुशूना ७ ं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रीयतां मिय स्वाहां ॥४॥

मनंसः कामंम् आकूंतिमितयाऽकूंतिम् वाचः सत्यम् अशीय । पृश्नुनाम् रूपम् अन्नस्य रसः यशः श्रीः श्रुयताम् मियं स्वाहां ॥४॥

हे मानव! पिछले मन्नो में वर्णित (स्वाहा) सत्यिक्रिया करके (मर्नसः) अन्तःकरण व (वाचः) वाणी में (सृत्यम्) सत्य और (आर्कृतिम्) उत्साह से (कार्मम्) उत्तम इच्छाओं की पूर्ति के लिए (रूपम्) सृष्टि के सुन्दर स्वरूप, (पृशूनाम्) पशुधन, (अर्न्नस्य) अन्न (रसः) रसादि आदि को (अशीय) प्राप्त करो । (मिय) मेरे आश्रित (यशः) कीर्ति और (श्रीः) ऐश्वर्य तुम में (श्रयताम्) आश्रय करें ।

Fourth mantra describes the benefits of purity in thoughts and speech.

rişhih manasa ityasya deerghatamaa, devataa shreeh, chhandah nichrid brihatee, svarah madhyamah

4. Om manasaḥ kaamamaakootim vaachaḥ satyamasheeya pashoonaam roopamannasya raso yashaḥ shreeḥ shrayataam mayi svaahaa

O Human! After performing (svaahaa) the havan described earlier, with (satyam) truth and (aakootim) determination in your (manasaḥ) thoughts and (vaachaḥ) speech, (kaamam) for the fulfillment of righteous desires, (asheeya) gain (roopam) the beautiful bounties of this creation in the form of (pashoonaaṃ) cattles, (annasya) grains, (raso) herbal nectar etc. May (yashaḥ) fame and (shreeḥ) wealth (shrayataam) take refuge in you as it does in (mayi) me.